

रामधारी सिंह 'दिनकर'

(जन्म : सन् 1908 ई., निधन : सन् 1974 ई.)

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। शिक्षा जगत में आप आचार्य, उपनिदेशक, कालेज के विभाग अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के कुलपति तक की यात्रा सफलता के साथ की है। आप राज्यसभा के सदस्य भी रहे हैं। इनकी कविताएँ राष्ट्रप्रेम, मानवप्रेम की परिचायक हैं। वे गाँधी विचारधारा से प्रभावित थे। वे प्रगतिशील सामाजिक चेतना के कवि थे। आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सन्मानित किया गया।

रेणुका, हुंकार, रसवंती इनके काव्यसंग्रह हैं। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, जैसे प्रबंध काव्य लिखे हैं। अर्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर तथा रेती के फूल इनके चिंतनात्मक निबंध हैं। संस्कृति के चार अध्याय इनकी प्रमुख गद्य रचना है।

प्रस्तुत काव्य बच्चों के लिए लिखा गया है। कुत्ता और खरहे - की कहानी को काव्य के रूप में प्रस्तुत किया है। वे इस कथा में यह बताना चाहते हैं कि छोटा या बड़ा, ताकतवर या कमजोर जब अपने प्राणों पर आ जाते हैं, तब उनमें विशेष शक्ति का संचार होता है। ईश्वर ने ऐसी शक्ति सबको दी है।

वन में एक घनी झुरमुट थी जिसके भीतर जाकर,
खरहा एक रहा करता था सबकी आँख बचाकर।

फुदक-फुदक फुनगियाँ घास की चुन-चुनकर खाता था,
देख दूर से लोगों को झुरमुट में छिप जाता था।

एक रोज आया उस वन में, कुत्ता एक शिकारी,
लगा छानने सूँघ-सूँघकर वन की झाड़ी-झाड़ी।

आखिर वह झुरमुट भी आई, जो खरहे का घर थी,
मगर खैर उस बेचारे की लंबी अभी उमर थी।

कुत्ते की जो लगी सांस, खरहा सोते से जागा,
देख पीठ पर खड़ा काल को जान लिये वह भागा।

झपटा पंजा तान मगर, खरहे को पकड़ न पाकर,
पीछे-पीछे दौड़ पड़ा कुत्ता भी जोर लगाकर।

चार मिनट तक खुले खेत में रही दौड़ यह जारी,
इतने में आ गई सामने घनी कंटीली झाड़ी।

भरकर एक छलांग गया छिप खरहा बीहड़ वन में,
इधर-उधर कुछ सूँघ, फिर कुत्ता निराश हो मन में।

एक लोमड़ी देख रही थी, यह सब खड़ी किनारे,
कुत्ते से बोली : मामा ! तुम हो खरहे से हारे।

इतनी मोटी देह लिए हो, फिर भी थक जाते हो,
वन के छोटे जीवजन्तु को भी न पकड़ पाते हो।

कुत्ता हँसा : अरी दीवानी ! तू नाहक बकती है,
इसमें है जो भेद उसे तू समझ नहीं सकती है।

मैं तो दौड़ रहा था केवल दिन का भोजन पाने,
लेकिन खरहा भाग रहा था अपनी जान बचाने।

कहते हैं सब शास्त्र कमाओ रोटी जान बचाकर,
पर संकट में प्राण बचाओ, सारी शक्ति लगाकर।

शब्दार्थ

झुरमुट वृक्षों-झाड़ियों का समूह, झाड़ी, खरहा जंगली खरगोश फुदकना उछलना कंटीली काँटों वाली बीहड़ भयानक घना दीवानी पगली

मुहावरे

आँख बचा के रहना नजर से दूर रहकर या छिपकर जीना, पीठ पर काल होना सिर पर मौत होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

- (1) सब की नजर बचाकर खरहा कहाँ रहता था ?
(अ) अपने बिल में (ब) झाड़ के तने में (क) झाड़ी में (ड) जंगल में
- (2) खरहा क्यों भागा ?
(अ) शिकारी कुत्ता पीछे पड़ा था । (ब) खाना खत्म हो गया था उसकी तलाश में ।
(क) लोमड़ी उसके पीछे भाग रही थी । (ड) जंगल में आग लगी थी ।
- (3) कुत्ता खरहे को क्यों न पकड़ पाया ?
(अ) कुत्ता खरहे के लिए भाग रहा था । (ब) खरहा अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा था ।
(क) कुत्ते में खरहे को पकड़ने की शक्ति न थी । (ड) खरहा बड़ा चालाक था ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) खरहा कहाँ रहता था ?
- (2) खरहा नींद से क्यों जाग गया ?
- (3) कुत्ते और खरहे के बीच दौड़ कहाँ और कब तक चली ?
- (4) लोमड़ी क्या देख रही थी ?
- (5) रोटी कमाने के विषय में शास्त्रों में क्या बताया है ? इस काव्य के आधार पर बताइए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) खरहा कहाँ और कैसे रहता था ?
- (2) खरहा झाड़ी से क्यों भागा ?
- (3) कुत्ता निराश क्यों हो गया ?
- (4) इस घटना को देखनेवाली लोमड़ी ने कुत्ते से क्या कहा ?
- (5) कुत्ते ने लोमड़ी को क्या उत्तर दिया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) 'कुत्ते की सीख' काव्य से क्या बोध मिलता है ?
- (2) 'कुत्ते की सीख' को कहानी के रूप में लिखें ।

5. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

कहते हैं सब शास्त्र कमाओ, रोटी जान बचाकर,
पर संकट में प्राण बचाओ, सारी शक्ति लगाकर ।

6. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द दीजिए :

खरहा, झुरमुट, शिकारी, कंटीली, बीहड़, देह, दीवानी, शक्ति ।

7. निम्नलिखित के विरोधी शब्द दीजिए :

दूर, आखिर, पीछे, निराश, मोटी, कमाना

योग्यता-विस्तार

- इस कथा का नाट्य रूपांतर करके कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।
- अन्य संवाद काव्यों तथा कथा काव्यों का संग्रह कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अपने जीवन की चिरस्मरणीय घटना का वर्णन कक्षा में कीजिए ।

